



सविता

हिन्दी ई-गृह पत्रिका
अक्तूबर-मार्च 2022-23

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय,
केरल, तिरुवनंतपुरम



सविता

हिन्दी ई - गृह पत्रिका
अक्तूबर-मार्च 2022-23



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय,
केरल, तिरुवनंतपुरम



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

हिन्दी ई-गृह पत्रिका

अक्तूबर-मार्च 2022-23

38 वां अंक

मुख्य संरक्षक

श्री बिजु जेकब

प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

सुश्री अनिम चेरियान

प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक

श्रीमती यशोदा

वरिष्ठ उप महालेखाकार

परामर्शदाता

श्री पी के लालू

वरिष्ठ उप महालेखाकार

सदस्य

श्री आई पी अरुण

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती विष्णुदेवी राजसेनन

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती जे आर आशा

हिन्दी अधिकारी

श्रीमती ए एम भद्राबिका

हिन्दी अधिकारी

श्रीमती टी वी राधिका

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमती बबिता

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री अनिता दास

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कवर पेज फोटोग्राफी: श्री जी सतीश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं,
सम्पादक मंडल की हमति आवश्यक नहीं है।

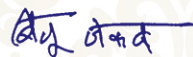
संदेश



कार्यालयीन गृह पत्रिका 'सविता' के 38 वे अंक के प्रकाशन पर मुझे अतीव हर्ष का अनुभव हो रहा है।

जिस प्रकार हम राष्ट्र ध्वज को सम्मान देते हैं वैसे ही हमारी भाषा भी सम्माननीय है। हिंदी भाषा के ज्ञान और उसके प्रयोग में हर भारतीय नागरिक को गौरव का अनुभव करना चाहिए और उसमें हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का आभास करना चाहिए। राजभाषा हिंदी के सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करना और उसके प्रचार-प्रसार को गति देने का दायित्व हम सब भारतीयों का है। विभागीय पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन, राजभाषा के प्रगति पथ पर स्थित एक मील के पत्थर के समान है जिसको हम प्राप्त कर चुके हैं। विभागीय पत्रिकाओं में प्रतिभाशाली कार्मिकों की कल्पनाएं प्रतिबिंबित होती है। यदि कर्मचारी उनकी हृदयंगम अभिव्यक्ति के लिए हिंदी भाषा चुनते हैं तो इसका अर्थ यह हुआ कि उनके हृदय में हिंदी भाषा के लिए जगह बनाने में हम सफल हुए हैं। इसके लिए संपादक मण्डल, विशेष बधाई के पात्र हैं।

मैं शुभकामनाएं देता हूँ कि हमारी हिंदी गृह पत्रिका 'सविता' का भविष्य सफल एवं उज्ज्वल हो।



बिजु जेकब
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा II)

संदेश



राजभाषा हिंदी को समर्पित हमारी कार्यालयीन पत्रिका 'सविता' का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करना अत्यंत हर्ष का विषय है। हमारा राष्ट्र एक ऐसी भूमि है जिसने हज़ारों भाषाओं, संस्कृतियों, धर्मों और परंपराओं को अपनी बाहों में समेटा है। क्षेत्रीय भाषाओं की विविधता में समस्त भारतवासियों के बीच सुदृढ़ कड़ी के रूप में हमें एक साथ बांधती है देश की शान हिंदी। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। इसी भावना के साथ हमारे कार्यालय की पत्रिका सविता का प्रकाशन किया जाता आ रहा है। कार्यालय के कर्मिकों द्वारा अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी के प्रचार व प्रसार में जो सहयोग दिया जा रहा है वह अत्यंत प्रशंसनीय है।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ और पत्रिका के सफल प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मिकों को उनके अथक प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देती हूँ।
जय हिंद ! जय हिंदी !

अनिम चेरियान

अनिम चेरियान
प्रधान महालेखाकार

संदेश



आप सभी के समक्ष सविता पत्रिका का यह अंक प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। इस पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के सभी कार्मिकों को अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सुअवसर मिलता है।

हिंदी को और अधिक सशक्त, सर्व सुलभ और जनोपयोगी बनाने के लिए यह कार्यालय सदैव प्रयासरत है तथा अपने दायित्वों के प्रति सजग है। साथ ही राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध भी है। वर्तमान में केंद्रीय स्तर पर राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग किया जा रहा है व अन्य विभागों, उपक्रमों और कार्यालयों को हिंदी में कार्य करने के प्रति प्रेरित भी किया जा रहा है। ऐसी भावना के साथ क्षेत्रीय स्तर पर राजभाषा संबंधी कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। इसी उद्देश्य से हाल ही में हमारे राज्य में दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया ताकि हिंदी को और अधिक संपर्क भाषा बनाया जा सके साथ ही हिंदी को और अधिक व्यवहार्य बनाने में सबका सहयोग प्राप्त हो सके।

राजभाषा पत्रिका सविता का भी यही उद्देश्य है राजभाषा हिंदी की दृष्टि से पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए हम कृतसंकल्प हैं तथा आपके सुझावों और मनोभावों का हार्दिक स्वागत है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए आप सभी को मेरी शुभकामनाएं।

पी.के. लाल
वरिष्ठ उप महालेखाकार / प्रशासन

संपादक की ओर से.....



हिंदी गृह पत्रिका सविता के 38 वं अंक आप सब के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

हर राष्ट्र की पहचान उनके राष्ट्रीय प्रतीकों से होती है। प्रत्येक देश के राष्ट्रीय प्रतीकों का अपना इतिहास, व्यक्तित्व और विशिष्टता है। लेकिन भारत जैसे बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक देश में प्रत्येक राज्य को एक सूत्र में बांध कर एकता बनाए रखने में उसकी सबसे प्रचलित भाषा हिंदी का योगदान भी महत्वपूर्ण है। इसीलिए ऐसा कहना गलत नहीं होगा कि भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के साथ-साथ राजभाषा भी दुनिया में भारत की अलग छवि बनाने में मदद करती हैं।

हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है। ऐसे में विभागीय पत्रिकाओं का प्रकाशन कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को नए आयाम प्रदान करने के साथ-साथ परोक्ष रूप से हिंदी में अधिक कार्य करने के लिए उनको प्रेरित भी करता है। यह अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि हमारे कार्यालय से करीब इक्कीस वर्षों से हिंदी गृह पत्रिका का अविराम प्रकाशन हो रहा है। कई साल पहले पांच-दस पन्नों की पत्रिका से शुरु होकर डिजिटल तौर से मुद्रित रंगीन पन्नों से अब ई-पत्रिका तक का सफर आसान नहीं था। समय के अनुरूप पत्रिका के कलेवर एवं ढांचे में बदलाव आता रहा है। 'ग' क्षेत्र से सृजनात्मक गुणों से संपन्न पत्रिका का प्रकाशन वास्तव में गरिमा का विषय है। प्रत्येक कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति कर्मचारियों की निष्ठा एवं लगन का प्रतीक एवं परिचायक है। पत्रिका, वह आईना है जिसमें हिंदी की प्रतिष्ठा प्रतिबिंबित होती है। इस दृष्टि से देखा जाए तो हम पूरी संतुष्टि के साथ कह सकते हैं कि हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के अनुकूल वातावरण सृजित करने में और अधिकारियों व कर्मचारियों को हिंदी के और अधिक करीब लाने में हम कामयाब हुए हैं।

वैविध्यपूर्ण विषयों पर सामग्रियां सम्मिलित करते हुए पत्रिका को आकर्षक एवं रोचक बनाने का भरसक प्रयास किया गया है। सभी रचनाकारों को साधुवाद। उम्मीद है कि सुधी पाठक अपने सुझावों से हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

यशोदा
यशोदा

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं एएमजी I)



पुरस्कृत कार्यालय:

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा -I), केरल

2018 की बाढ़, जिसने राज्य की आबादी का छठवां हिस्सा प्रभावित किया, केरल में लगभग एक सदी की सबसे भीषण बाढ़ थी। इस विषय के महत्व के कारण, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -I) केरल के कार्यालय ने 2018 की बाढ़ के बाद केरल में बाढ़ से बचने की तैयारी और प्रतिक्रिया पर एक निष्पादन लेखापरीक्षा की। निष्पादन लेखापरीक्षा में कई संस्थाओं को शामिल किया गया जैसे कि जल संसाधन, बिजली, आग और बचाव विभाग, केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी), भारतीय मौसम विभाग, केरल राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण आदि। राज्य में सबसे अधिक प्रभावित बेसिनों में से एक पेरियार बेसिन को प्रमुख बाँधों की उच्चतम सांद्रता की वजह से अध्ययन के लिए चुना गया।

जल अनुसंधान के लिए अंतर्विषयक केंद्र (आईसीडब्ल्यूआर) और भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) बेंगलूर को हाइड्रोलॉजिकल और भूवैज्ञानिक देता के विश्लेषण से निष्कर्ष निकालने के लिए सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया।

लेखापरीक्षा मॉडलिंग तकनीकों के उपयोग के साथ एक व्यापक अनुमान प्रस्तुत कर सकी। विस्तृत स्रोतों में डेटा का व्यापक उपयोग इस लेखापरीक्षा का एक और महत्वपूर्ण पहलू था। हाइड्रोलॉजिकल इंजीनियरिंग सेंटर के हाइड्रोलिक मॉडलिंग सिस्टम (एचईसी - एचएमएस) के माध्यम से बाढ़ का सिमुलेशन किया गया। सबसे पहले, वर्षा डेटा और वर्षा गेज स्थान डेटा, बांध डेटा, स्पिलेज डेटा और साथ ही गेज

डेटा का उपयोग किया गया। सीडब्ल्यूसी गेज डेटा और जीआईएस फाइलें, आईआईएससी द्वारा नासा से दो दशकों -1985,1995 और 2005 में भूमि उपयोग भूमि कवर परिवर्तन अध्ययन डेटा प्राप्त किया गया। आईआईएससी द्वारा हाइड्रोलॉजिकल मॉडलिंग द्वारा डेटा का उपयोग करके पेरियार बेसिन के मॉडल तैयार किए गए। बाढ़ के दौरान जलाशय संचालन की भूमिका की भी जांच की गई।

लेखापरीक्षा निष्कर्षों के जवाब में, केरल सरकार ने आश्वासन दिया कि राज्य में प्रमुख नदियों के लिए मास्टर प्लान तैयार किया जाएगा और बाढ़ के ग्रस्त और घनी आबादी वाले क्षेत्रों से गुजरने वाली नदियों को प्राथमिकता दी जाएगी। राज्य सरकार ने आगे आश्वासन दिया कि राज्य में फ्लड प्लेन जोनिंग बिल को अधिनियमित करने पर व्यवहार्यता अध्ययन बिना विलम्ब के किया जाएगा।

लेखापरीक्षा दिवस 2022 के सिलसिले में प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) कार्यालय केरल को नवाचार एवं उत्कृष्टता के लिए सीएजी के पुरस्कार हेतु चुना गया था। लेखापरीक्षा दिवस समारोह 16 नवंबर 2022 को नई दिल्ली में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय में आयोजित किया गया। भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी ने दीप प्रज्वलित कर ऑडिट दिवस 2022 का उद्घाटन किया। इसके बाद श्री गिरीश चंद्र मुर्मू, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए, समारोह के दौरान निम्नलिखित अधिकारियों/पदाधिकारियों (ऑडिट टीम) को पुरस्कार प्रदान किये गए:-

1. श्री एस. सुनील राज, आईएएस
2. सुश्री अनु जोस, आईएएस
3. सुश्री संध्या रामचंद्रन एस, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
4. श्री सुरेश के, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
5. श्री श्रीजीत कुलंगरापरमबत, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी
6. श्री हरी शंकर एन, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी
7. सुश्री आशा दीपा एस.एन.सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी
8. श्री अर्जुन रमेश, सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी
9. श्री आर. हरिकुमार, सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय की विजेता ऑडिट टीम को बधाइयां। उक्त समारोह के दौरान श्रीमती जी सुधर्मिनी, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), अनिम चेरियान, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) और डॉ. बीजू जैकब, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) भी उपस्थित थे। देश भर से प्रधान महालेखाकार/ महालेखाकार और भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी समारोह के साक्षी बने। ■



ऑडिट दिवस 2022 - उद्घाटन समारोह



ऑडिट दिवस 2022 समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रम



केरल में सार्वजनिक क्षेत्र प्रबंधन पर संगोष्ठी



साइकिल रैली



कॉलेज छात्रों के लिए आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, 2022

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन और हिंदी दिवस का सम्मिलित आयोजन पंडित दीन दयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम, सूरत, गुजरात में 14 व 15 सितंबर 2022 को समादरणीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के मुख्य आतिथ्य में किया गया और माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नितीश प्रमाणिक, गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा, विदेश एवं शिक्षा राज्य मंत्री श्री राजकुमार संगमा ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर भाग लिया। मंच पर श्री भर्तृहरि मेहताब, उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति एवं श्री भूपेंद्र भाई पटेल, मुख्यमंत्री गुजरात एवं गुजरात राज्य सरकार के गृह मंत्री श्री हर्ष संघवी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजभाषा विभाग की सचिव श्रीमती अंशुली आर्य द्वारा की गई। उक्त सम्मेलन में देश भर के सचिव, अपर सचिव, संयुक्त सचिव एवं विभिन्न उपक्रमों के सी एम डी एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

छः सत्रों में आयोजित इस सम्मेलन के प्रथम सत्र में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय श्री अमित शाह जी द्वारा हिंदी दिवस एवं सम्मेलन का उद्घाटन किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में केंद्रीय गृह मंत्री जी ने कहा कि प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी ने आह्वान किया है कि अमृत काल में देशवासियों को संकल्प लेना चाहिए कि आने वाले 25 सालों में हमारा देश किसी भी भाषाई लघुता ग्रंथि से मुक्त होकर स्वभाषा का विकास करेगा और देश को दुनिया में सर्वोच्च स्थान पर पहुंचाएगा। जब तक हम इस बात का संकल्प नहीं करते कि हमारा शासन, प्रशासन, ज्ञान और अनुसंधान हमारी भाषाओं और राजभाषा में हो तब तक हम इस देश की क्षमताओं का उपयोग नहीं कर सकते। हमारा देश भाषाई रूप से बहुत समृद्ध है और इन भाषाओं ने हमारी संस्कृति, परंपरा और साहित्य को संभालकर रखा है। स्थानीय भाषाएं और हिंदी हमारी सांस्कृतिक धारा प्रवाह का प्राण है। उन्होंने देश के युवाओं से कहा कि भाषा क्षमता की परिचायक नहीं है बल्कि भाषा सिर्फ विचारों की अभिव्यक्ति है। जब तक देश का युवा अपनी क्षमताओं के आधार पर अपनी भाषा में मौलिक चिंतन की अभिव्यक्ति नहीं करेगा, वो कभी भी अपनी क्षमताओं को पूर्णतया समाज के सामने नहीं रख सकता क्योंकि मौलिक चिंतन की अभिव्यक्ति स्वभाषा से अच्छी किसी भी भाषा में नहीं हो सकती। इस शुभ अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी ने विश्वस्तरीय अनुवाद टूल 'कंठस्थ 2.0' तथा हिंदी बृहद शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु, संस्करण -1' का भी लोकार्पण किया। यह शब्दकोश पूर्ण

रूप से डिजिटल और सर्वसुलभ है। उद्घाटन समारोह के अलावा आयोजित अतिरिक्त पांच सत्रों में राजभाषा के बहुआयामी प्रयोग के विभिन्न विषयों जैसे-

- पहला सत्र : विगत 75 वर्षों में राजभाषा हिंदी की विकास-यात्रा
- दूसरा सत्र : युवाओं को गर्व की अनुभूति कराती हिंदी
- तीसरा सत्र : महात्मा गांधी का भाषा चिंतन और राष्ट्र के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान
- चौथा सत्र : भाषाई समन्वय का आधार है हिंदी
- पांचवां सत्र: भारतीय सिनेमा और हिंदी पर विशेष उपलब्धि प्राप्त वक्ताओं ने अपने अपने विचार साझा किए।

प्रथम सत्र: विगत 75 वर्षों में राजभाषा हिंदी की विकास-यात्रा में राज्यसभा के उप सभापति श्री हरिवंश, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब, संसदीय राजभाषा समिति के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ सत्यनारायण जटिया जैसे गणमान्य वक्ता उपस्थित थे और स्वतंत्रता संग्राम में लोगों के बीच एकजुटता की भावना लाने में हिंदी भाषा ने कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, इस पर प्रकाश डाला। यह विशेष उल्लेखनीय है कि श्री भर्तृहरि महताब जी ने केंद्र सरकार कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु राजभाषा संवर्ग के कर्मियों एवं हिंदी अधिकारियों के प्रयासों को विशेष महत्व दिया। डॉ सत्यनारायण जटिया जी ने बताया कि संविधान में अंग्रेजी का प्रावधान हमारी गुलाम मानसिकता को दर्शाता है। हिंदी हमारी मौलिक सोच है और इसका स्थान विश्व की कोई भाषा नहीं ले सकती।



द्वितीय सत्र: युवाओं को गर्व की अनुभूति कराती हिंदी के वक्ता रहे श्री प्रसून जोशी, अध्यक्ष, केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड, भारतीय प्रशासनिक सेवा के श्री गंगा सिंह और श्री निशांत जैन और अभिनेता श्री पंकज त्रिपाठी। श्री प्रसून जोशी का कहना था कि जीविकोपार्जन की भाषा होने के कारण अंग्रेजी हमारा कौशल हो सकती है लेकिन हमारी भाषा हिंदी का स्थान नहीं ले सकती। हिंदी भाषा जो समावेशी है, सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर चलती है। इन विद्वानों का कहना था कि देश के समग्र विकास हेतु अपनी सभी भाषाओं का विकास आवश्यक है। श्री पंकज त्रिपाठी जी ने फिल्म इंडस्ट्री में अपनी सफलता का श्रेय हिंदी भाषा को ही दिया। उनका कहना था कि उनकी भाषा और सोच दोनों हिंदी होने के कारण ही उनके भाव और संवाद एकीकृत होकर लोगों के दिलों तक पहुँचने में सफल हुई है।

तीसरा सत्र: महात्मा गांधी का भाषा चिंतन और राष्ट्र के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान पर रहा और शुरुआत हुई श्री रीता बहुगुणा जोशी, लोकसभा सांसद प्रोफेसर के वक्तव्य से। दूसरा वक्ता रहे प्रो. राम मोहन पाठक, पूर्व कुलपति, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, तीसरा वक्ता थे प्रो. आर. एस. दुबे, कुलपति, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय और अंतिम वक्ता रहे उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष श्री हृदय नारायण दीक्षित। जोशी जी ने बताया कि एक गैर हिंदी भाषी होने के बावजूद भी महात्मा गांधी और सरदार पटेल ने हिंदी भाषा की काबिलीयत को पहचाना, स्वतंत्रता संग्राम में एक हथियार के रूप में हिंदी का प्रयोग करते रहे और भाषाई संस्कृति को जोड़ते हुए अखंड भारत का निर्माण किया।

चौथा सत्र: भाषाई समन्वय का आधार है हिंदी पर गणमान्य व्यक्तियों ने अपना वक्तव्य रखा उसेमें सर्वप्रथम थे वरिष्ठ पत्रकार श्री आलोक मेहता जी। तत्पश्चात श्री चामू कृष्ण शास्त्री और सांसद, लोकसभा के सुश्री पूनम बेन हेमंत भाई और सांसद, राज्यसभा के संगीता यादव ने इस विषय पर अपना विचार व्यक्त किया। संगीता यादव जी ने अपने विचार व्यक्त किया कि अंग्रेजी हमारी सांस्कृतिक दासता का प्रतीक है और इससे मुक्ति पाने के लिए हिंदी भाषा का विकास जरूरी है। पूनम जी का कहना था कि हिंदी की सरलता पूरे देश को जोड़ती है। इस भाषा में भारत के सभी भाषाओं का संगम है। मेहता जी का कहना था कि भाषा एक बहती नदी है, यदि रुक गई तो विलुप्त हो जाएगी और भाषा को व्यवहार में लेने पर भी भाषा समृद्ध हो सकती है। शास्त्री जी ने भी भाषा की तुलना नदी से की। उन्होंने कहा कि सभी भाषाएं सहायक नदियां जैसी हैं जिनके बीच समन्वय स्थापित करने से अभिव्यक्ति प्रभावी और भावपूर्ण हो सकती है। इसलिए एक विकसित भारत के लिए हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं के बीच समन्वय स्थापित करना अति आवश्यक है।

पांचवां सत्र: भारतीय सिनेमा और हिंदी पर अतिथि वक्ताओं ने श्रोताओं से अपने विचारों का साझा किया। सत्र के प्रथम वक्ता: डॉ श्री संजय द्विवेदी, महानिदेशक, भारतीय जन संपर्क और जन संचार संस्थान थे। माननीय संजय द्विवेदी जी ने दो दशकों तक पत्रकारिता में अपनी पहचान बनाई है और पत्रकारिता की दुनिया में एक नई दशा और नई दिशा का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने लगभग ढाई दर्जन पुस्तकों का लेखन/संपादन किया है। वर्तमान में वे एफ टी आई आई सोसायटी, पुणे की गवर्निंग काउंसिल के सदस्य हैं।



उन्होंने इस सत्र के आयोजन के लिए बधाई देते हुए अपने भाषण की शुरुआत की और कहा कि इन दिनों राजभाषा का जो काम हो रहा है वह अपने आप में अनूठा है। भाषण के दौरान उन्होंने कहा कि "नेल्सन मंडेला ने कहा कि अगर आप किसी से ऐसी भाषा में बात करते हैं जिसे वह समझ सकता है, तो यह उनके दिल और दिमाग में जाती है।" हमारी भाषाएं केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं हैं हमारे जीवन, हमारी आकांक्षाओं की भाषा हैं। हिंदी हमारी भावना, सपने, व्यवहार को दर्शाने वाली भाषा है और इसलिए जनसंचार के प्रभावशाली माध्यम के रूप में हम हिंदी सिनेमा को देखते हैं। भारत एक बहुभाषीय, बहुजातीय समाज का विविधता भरा राष्ट्र है। हिंदी ही मात्र एक भाषा है जो उत्तर में जम्मू से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में असम तक बोली व समझी जाती है। सिनेमा के लिए अपनी भाषा होती है और प्रत्येक सिनेमा शुरू से अंत तक एक कहानी को प्रस्तुत करता है। कहानी पात्रों के संवादों से आगे बढ़ती है। संवादों को फिल्मों की भाषा कहा जा सकता है। हिंदी भाषा की कई बोलियां हैं जैसे हरियाणवी, ब्रज आदि। हिंदी सिनेमा के प्रारंभिक दौर में "राजा हरिश्चंद्र" फिल्म में मराठी भाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा के भी सब टाइटल्स लिखे थे। बोलियां हमारे संवादों में मदद करती

हैं। हिंदी की तमाम बोलियों को हिंदी सिनेमा की भाषा में गुंथा गया और इन संवादों के जरिए भारतीय संस्कृति को दुनिया के कोने कोने में पहुंचाने में हिंदी सिनेमा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। भारतीय भाषा के विश्व भाषा के रूप में स्वीकार्यता का मुख्य कारण हिंदी गीतों की लोकप्रियता है। भारत की आजादी के बाद जब श्री राज कपूर द्वारा फिल्म श्री 420 का निर्माण किया तब उस फिल्म के एक गाने - 'मेरा जूता है जापानी, मेरा पतलून इंग्लिशतानी मेरी लाल टोपी रूसी में पूरे वैश्विक संस्कृति को समाहित किया। हिंदी फिल्मों ने केवल भारतीय भाषाओं को ही नहीं मूल्यों को भी प्रसारित किया। क्षेत्रीय भाषाओं व विभिन्न आचार-विचार के आदान प्रदान में सिनेमा की बहुत बड़ी भूमिका है। हिंदी सिनेमा में भारत की विभिन्न भाषाओं का समन्वय है। प्रथम बोलती फिल्म आलमआरा में हिंदी और उर्दू की मिश्रित बोली का मिश्रण है। मदन इंडिया में भोजपुरी भाषा का प्रयोग किया गया है। आज भारतीय सिनेमा में सभी भारतीय भाषाओं का मिश्रण है। अन्य छोटी-छोटी भाषाओं में निर्मित फिल्में जैसे 'आर आर आर', 'बाहुबली' आदि फिल्मों की डबिंग करने के कारण प्रत्येक क्षेत्र की संस्कृति देश के कोने-कोने तक पहुंचाने में मददगार बन गए। इस प्रकार हिंदी भाषा में क्षेत्रीय भाषाओं के फिल्मों की डबिंग करने के जरिए विभिन्न संस्कारों का आदान प्रदान ही नहीं, बल्कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के लिए ज्यादा कमाई का एक नया क्षितिज भी खोल दिया गया। हिन्दी भाषा को सशक्त रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय हिन्दी सिनेमा को ही जाता है। हिंदी में बनी वेबसीरीज एक नए बाजार को खड़ा कर रही हैं। सिनेमा नए-नए प्रयोग कर रहा है। साल 2022 में 18 फिल्में रिलीज हुईं जिनमें से अकेले कश्मीर फाइल्स ने ₹ 200 करोड़ का व्यापार किया है। यह हिंदी की ही शक्ति है।

दूसरा वक्ता श्री अजय तोमर आई पी एस, आयुक्त, सूरत ने अपने भाषण में हिंदी भाषा और साहित्य के इतिहास पर प्रकाश डाला। यह सर्व विदित है कि हिंदी की जननी संस्कृत है। पंद्रह सौ ई. पू. से पांच सौ तक संस्कृत ही बोली जाती थी। संस्कृत व्याकरण निष्ठ होने के कारण विद्वानों से सीखनी पड़ती थी। संस्कृत का व्याकरण क्लिष्ट होने पर आम आदमी ने भाषा में परिष्कार करना चाहा और बोलचाल की भाषा आई। इस तरह पहली ई. तक पाली आ गई। विद्वानों ने पाली को भी व्याकरण से बांधा और आम आदमी पाली से प्राकृत की ओर बढ़ी। इस तरह प्राकृत से अपभ्रंश, अपभ्रंश से अवहट ऐसे अनेक स्तरों से होकर हिंदी की विकास यात्रा गुजरती है। उन्होंने भाषा के विकास की विभिन्न स्थितियों पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी साहित्य की ओर रुख किया। तोमर जी ने अपनी भाषण के दौरान भारत की सभी भाषाएं गुंजती कबीर दास की रचनाएं, रामचरित मानस के रचयिता महाकवि तुलसीदास, अंधेर नगरी चौपट राजा, भारत दुर्दशा आदि के रचयिता श्री भारतेन्दु हरिश्चंद्र जो नाटकों के जरिए छुपे तरीके से अंग्रेजों पर वार करते थे से लेकर श्री देवकी नंदन खत्री जिन्होंने हिंदी साहित्य क्षेत्र में जासूसी उपन्यास लिखना शुरू किया था तक प्रकाश डाला। उर्दू भाषा हिंदी से अलग नहीं है फिर भी खत्री जी की रचना चंद्रकांता और चंद्रकांता संतति पढ़ने के लिए लोग अरबी और उर्दू छोड़कर हिंदी सीखना शुरू किए थे। तत्पश्चात - साहित्यिक जगत में मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचंद, नीरज, कमलेश्वर जैसे विख्यात साहित्यकार

का आगमन हुआ। साहित्य से ही फिल्में बनती हैं। फिल्मों में जान हिंदी कृतियों से आती है। कमलेश्वर जी की कहानी पर बनाई गई फिल्म मौसम और पुलिस विभाग की उलझनों को प्रस्तुत करती फिल्म अर्थ सत्य का विशेष उल्लेख भी किया गया।



तीसरा और चौथा वक्ता रहे फिल्मी जगत के जाने माने निर्माता/ अभिनेता श्री महेश मांजरेकर और पद्मश्री डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी। मराठी सिनेमा जगत से अपने सफर की शुरुआत करते हुए हिंदी सिनेमा जगत में विराजमान श्री महेश मांजरेकर जी ने अपने भाषण में इस बात पर जोर दिया कि हिंदी एक जोड़ने वाली भाषा है। साहित्य की प्रतिष्ठाया ही सिनेमा है जो समाज को दर्शाता है। सिनेमा के माध्यम से लोगों को कई संदेश दिए जा सकते हैं और यह समाज को बिनाशकारी मुद्दों से भी अवगत करा सकता है। समाज में जो कुछ भी होता है वह सिनेमा में परिलक्षित होता है।

डॉ. द्विवेदी जी ने भारत को नमस्कार करते हुए अपना भाषण शुरू किया। समाज का एक हिस्सा जो जितना बड़ा है या छोटा है यह बहुत महत्व का नहीं है। उन्होंने बताया उर्दू किसी समाज विशेष की भाषा नहीं है। विद्वानों ने हिंदी को राजभाषा के रूप में चुन लिया था, इसलिए कि राष्ट्र में हिंदु और मुसलमान हिंदी का प्रयोग करते हैं। केवल संस्कृतनिष्ठ हिंदी ही हिंदी नहीं है उर्दू के शब्दों वाली हिंदी भी हिंदी ही है। उर्दू मिश्रित हिंदी का प्रयोग पृथ्वीराज रासो में किया है। पृथ्वीराज रासो में चंदबरदाई ने यवन भाषा का प्रयोग किया है। रामचरित मानस में उर्दू, फारसी, अरबी, पंजाबी आदी कई भाषाओं/ बोलियों का प्रयोग किया गया है। भाषा सर्व समावेशी होनी चाहिए। हमने

तमाम सभ्यताओं से बहुत कुछ लिया है और तमाम सभ्यताओं को बहुत कुछ दिया है। वर्ग विशेष की घृणा के कारण ही लोग उर्दु भाषा का विरोध करते हैं। हिंदी भाषा में सभी प्रांतीय भाषाओं के समान ही उर्दु का भी स्थान है। उर्दु के अभाव में हिंदी की संकल्पना न तो उचित होगी न ही संभव। जो सर्व मत होगा जो जन मत होगा ऐसी भाषा का प्रयोग हमें सिनेमा में करना चाहिए। उपभोक्ताओं के दृष्टिकोण से ही सिनेमा बनाया जाता है। सिनेमा के द्वारा निश्चित ही ज्वलंत मुद्दों पर समाज को जागरूक करने का कार्य किया गया है।

संक्षेप में भाषा के प्रचार-प्रसार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है सिनेमा। सिनेमा कहानी से बनता है और कहानियों में समाज विशेष की सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन, वेष-भूषा, आचार-विचार, खान-पान, उत्सव-मेले परिलक्षित होते हैं। भारत जैसे बहु-भाषी बहु-सांस्कृतिक परंपरा वाले राष्ट्र में विभिन्न भाषाएं और बोलियों का प्रयोग किया जाता है। इसलिए सिनेमा में पात्रों की भूमिका और परिस्थितियों को देखकर ही भाषा का प्रयोग किया जाता है।

साहित्य हमेशा समाज को प्रभावित करता रहा है। साहित्यिक संरचना का मूलाधार भाषा है। परंतु जब साहित्य फिल्मी पदों पर आ जाता है तो दृश्य उसके केंद्र में होता है। इसी कारण बहुत सारे निरक्षर और गैर भाषाई वर्ग तक साहित्य की पहुंच हो जाती है। ऐसा कहे तो हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में हिंदी सिनेमा की दृश्यता का बड़ा योगदान है। प्रारंभिक दौर की सिनेमा पुराणों, देवी-देवताओं के चरित्र पर बनता था, जिसमें संस्कृत निष्ठ हिंदी भाषा का ही प्रयोग किया जाता था। बाद में ऐतिहासिक काल वाले सिनेमा में मुगल काल की प्रधानता के कारण उर्दु भाषा का प्रयोग किया जाने लगा। वही ग्रामीण परिवेश का सिनेमा में बोलियों का प्रयोग किया जाने लगा। फिल्मकारों ने हमेशा भारत की विभिन्न जातीय और सांस्कृतिक परंपराओं को अपनी फिल्मों में समाहित करने का प्रयास किया और हिंदी भाषा को उच्च स्थान दिया। हम सभी के समक्ष वह सिनेमा आता है जिसमें पात्रों का संवाद भले ही हिंदी में होता है, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि कहानी का संबंध हिंदी भाषी क्षेत्र से हो और सिनेमा का निर्माता, निर्देशक, अभिनेता, संगीतकार आदि हिंदी भाषी हो। सिनेमा का मूल रस समरस समाज का होता है। हिंदी सिनेमा ने देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक संरचना में जो बदलाव लाए हैं इसमें हिंदी भाषा के सभी रूपों का योगदान है। जैसे प्रकृति परिवर्तनशील है उसी प्रकार भाषा भी। हिंदी भाषा और साहित्य के अंतरसंबंध से भारतीय सिनेमा का विकास होगा और हिंदी भाषा प्रगति के पथ पर अग्रसर होगी। परिवर्तन प्रकृति का नियम है।



केवल कुमार मकवाना
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एकता

अभी हाल ही की बात है। ऑस्ट्रेलिया के एक मेट्रो स्टेशन की, स्टेशन रोज की तरह मुसाफिरों से भरा हुआ था। सभी लोग पूरी हड़बड़ी के साथ यहां से वहां जा रहे थे। सुबह की घड़ी थी और सबको पता ही है कि सुबह को सबको काम पर जाना होता है और कितनी हड़बड़ी होती है।

इसी हड़बड़ी में एक व्यक्ति भी अपने घर से भागा भागा आ रहा था। एक हाथ में कॉफी का मग था और दूसरे हाथ में मोबाइल फोन था। ऑफिस के लिए जा रहा था। एक नोटिफिकेशन आता है उसके फोन पर और वह उसे देखने के लिए अपना ध्यान फोन की ओर करता है। इसीके साथ-साथ उसकी ट्रेन भी आ जाती है। और वह अपनी ट्रेन की ओर चलता है। जल्दबाजी और अपना ध्यान फोन में लगाए युवक नीचे ध्यान से नहीं देखता और उसकी टांग ट्रेन और प्लेटफार्म के बीच की जगह में फंस जाती है। बेचारा धड़ाम से गिरता है और उसकी चीख निकल जाती है। बेचारे का फोन भी गिरके टूट जाता है और उसकी कॉफी भी उसके ऊपर गिर जाती है, कपड़े खराब हो जाते हैं। लेकिन सबसे बुरा तो यह हुआ कि उसकी टांग अब उस ली जगह में फंस चुकी है।

लोग तुरंत यह देखकर इकट्ठा हो जाते हैं पर कुछ होता नहीं धीरे - धीरे भीड़ बढ़ जाती है। मेट्रो के कर्मचारी भी आ जाते हैं। फिर वह कहते हैं कि सब मेट्रो ट्रेन के अंदर जा कर दूसरी ओर चले जाए जहां वह युवक फंसा हुआ होता है उसके बिलकुल विपरीत ट्रेन के अंदर ताकि ट्रेन युवक की साइड से ऊपर उठ जाए और वह आजाद हो जाए पर



यह तरीका काम नहीं करता। बेचारा युवक अब भी फंसा हुआ था। तब एक मेट्रो कर्मचारी कहता है कि मेट्रो के डिब्बे को धक्का मारते हैं, वह मेट्रो को जहां पर युवक फंसा हुआ उसके विपरीत एंगल में धक्का मरने लगा। जाहिर सी बात है कुछ होने वाला नहीं था, एक आदमी अकेला इतना भारी रेल का डब्बा हिला नहीं सकता था, पर उसे देखकर और भी लोग इस काम में शामिल हो गए। देखते ही देखते पूरी भीड़ मेट्रो ट्रेन के डिब्बे को विपरीत दिशा में धक्का मारने लगी और इस कारण डब्बा विपरीत दिशा में झुक गया और युवक ने अपनी टांग बाहर निकल ली और फिर सबने डब्बे को छोड़ दिया। अब युवक आजाद था।

इससे यह सीखने को मिलता है कि अकेली पानी की बूँद न के बराबर है पर जब बहुत सारी बूँदे एक साथ जुड़ जाए तो समुन्द्र बन जाती हैं, सुनामी आ सकती है।

उस दिन दो बातें अच्छे से समझ में आ गईं। पहली कि मेट्रो के डिब्बे में चढ़ते वक़्त वह 'माइंड दी गैप' ऐसे ही फालतू में नहीं लिखा, डिब्बे में चढ़ते या उतरते वक़्त ध्यान देना चाहिए, मोबाइल फोन को नहीं देखना चाहिए और दूसरी की एकता में बहुत बल है।

एक अकेली पेड़ की टहनੀ कुछ भी नहीं आसानी से तोड़ी जा सकती है, पर बाकी की कई टहनियों को बांध दे तो उसे तोड़ना ना के बराबर है। ■



श्री साई कुमार जे ए
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

द्रोपदी-रक्षक का आग्रह

(इस कथा में कृष्ण-भगवान को कई नामों से संबोधित किया गया है।)

एक मद गज ने अपने अपार शक्ति और बल से एक वृक्ष को नीचे गिराया। उसी वृक्ष के बिल में एक छोटी-सी चिड़िया अपने चार नन्हें बच्चों के साथ घोंसले में सुखानंद से रहते थे। बहुत छोटे होने के कारण चिड़िया के बच्चे उड़ भी नहीं पाते थे। महा-वृक्ष के साथ चिड़ियों का घोंसला भी नीचे गिर गया। उस निःसहाय पक्षी ने देवकी-नंदन का आश्रय लेने को ठान लिया। अपनी बलहीन स्थिति में भी वह पक्षी उड़कर भगवान के पास आ गई। अपने दोनों पंखों को जोड़कर प्रणाम किया। यह सब देखकर योद्धा अर्जुन को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। लेकिन नंदलाल के लिए यह सब साधारण था। मंद-मुस्कान से वे पक्षी की ओर देखे।

“ये सब क्या है भगवान वासुदेव-नंदन?” पक्षी ने पूछा

“निकट भविष्य में होने वाले युद्ध का परिणाम है”, भगवान श्रीधर ने उत्तर दिया।

कुरुक्षेत्र युद्ध निश्चित है। युद्ध का क्षेत्र भी निश्चित किया गया है। युद्ध की तिथि भी निश्चित कर ली गई है। दोनों प्रतिद्वंद्वियों ने अपने-अपने बल का समीकरण भी आरंभ कर दिया है। युद्ध से संबंधित सारे अस्त्र-शस्त्र की व्यवस्था भी हो गयी है। अश्वौहिणी सेना का चरित्रात्मक युद्ध है। इस युद्ध में न जाने कितने सिर-छिद्र होंगे। कुरुक्षेत्र रणभूमि को हाथियों की मदद से समतल बनाया जा रहा है। पत्थर, झाड़ियों को हाथियों द्वारा साफ किया जा रहा है। उस युद्धभूमि कुरुक्षेत्र को जाँचने के लिए महारथि सारथी श्रीकृष्ण और योद्धा अर्जुन आए हैं।

चिड़िया ने पूछा कि “कल अगर दूसरा हाथी आएगा और अपने पैरों से घोंसला और मेरे बच्चों को कुचल डालेगा तब मेरे नन्हें बच्चों की स्थिति क्या होगी। क्या यह भीषण युद्ध मेरे परिवार के अंत से आरंभ होगा, भगवान गोपिका-बल्लभ” - पक्षी ने विलाप किया।

मैं सुन रहा हूँ, मैं हूँ ना, इस तरह का कोई आश्वासन भगवान केशव से नहीं मिला ।
“जैसा लिखा गया वैसा ही होगा, विधिपूर्वक होगा, काल-चक्र निर्णय लेगा । हम सब निमित्त-मात्र है ।” बड़े ही निर्दय होकर भगवान नंद ने कह दिया । मगर कुछ सोच में डूब गए ।

“आप तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के सूत्रधारी है, आपके वाक्यों को अच्छी तरह से मैं जानती हूँ, मुझे तत्वज्ञान मत दीजिए, आप ही तो काल चक्र है, सब कुछ आपकी लीला है, आप से ही तो यह जहां है ।”

“मेरे नन्हें बच्चों की रक्षा करना, प्रभु । आप ही पर सारा भार डाल रही हूँ । आप ही तो रक्षक है, ये मेरा निवेदन है, मेरे गिरिधर ।” चिड़िया अति विनम्रतापूर्वक बोली।
जाने दीजिए प्रभु, अपने साथ ले जायेंगे, कोई सुरक्षित प्रदेश में छोड़ देंगे । बड़ी ही दया और नम्रता से अर्जुन कह रहे थे ।

भगवान अच्युत ने स्वीकार नहीं किया । चिड़िया निस्सहाय रह गई । अंत में जाने से पहले श्रीकृष्ण ने चिड़िया से कहा “तीन सप्ताह के लिए पर्याप्त खाद्य भण्डार रख लेना ।”

चिड़िया और अर्जुन इसका मूल अर्थ समझ नहीं पाए । दो दिन बीत चुके थे । युद्ध के शंखनाद बज चुके थे । दोनों ओर से अपने-अपने बल का प्रदर्शन किया जा रहा था । भीषण युद्ध का आरंभ निश्चित था । बस कुछ ही समय में युद्ध आरंभ होने वाला था ।

“मेरे प्रिय अर्जुन एक बार के लिए अपना गांडीव मुझे देना ।” गोकुल नंद ने अर्जुन से निवेदन किया ।

पार्थ आश्चर्य चकित हो गए । हे सर्वान्तर्यामी आप तो युद्ध में अस्त्र नहीं उठाने का संकल्प लिये थे । युद्ध में भाग नहीं लेने वाले थे । पर अब क्यों गांडीव । आप आदेश दीजिए, मैं बध करने से पीछे नहीं हटूंगा ।

श्रीकृष्ण ने बिना कुछ बोले गांडीव को अपने हाथ में ले लिया और एक बाण उठाया सीधा निशाना साधा और गर्जेन्द्र के मस्तिष्क पर अपना बाण चलाया । बाण सीधा गया । उस गर्जेन्द्र के गले में स्थित एक बड़ी घंटी को छुआ । गर्जेन्द्र के गले से तार टूट गया और घंटी नीचे गिर गई । यह देख अर्जुन को हँसी आई।



“हे रामनारायण ये क्या कर दिया आपने ? ये तो अपशकुन है। आपके बाण का लक्ष्य चूक गया, ये क्या हो गया”

“अगर आप कहें तो मैं उस गज का वध कर दूँ ? ” अर्जुन ने कहा।

बिना कुछ कहे ही यशोदो कन्हैया ने गांडीव को लौटाया। युद्ध आरंभ हो गया। युद्ध इतना भीषण था कि ध्वनि भी मृत्यु-मृदंग-सी प्रतीत हो रही थी। पूरे 18 दिनों तक इधर-उधर प्रत्येक जगह अनगिनत गज और अश्वों का कलेवर और कटी अवयव एवं अंग बिखरे हुए थे। टूटे हुए रथ, बाण, धनुष, कृपाण, गदा आदि के अतिरिक्त आकाश में मंडराते गिद्ध। रक्त और कलेवर के बीच मृत्यु देव के तांडव नृत्य की दुर्गंध। अंत में अर्जुन के साथ मथुरावासी शव और मृतक कलेबर के बीच कुछ दूँड रहे थे।

मेरे प्रिय अर्जुन, उस घंटी को धीरे से उठाओ। कुछ कहे बिना अर्जुन ने घंटी उठाया। रुक्मिणी प्रिय भगवान की लीला, पार्थ-प्रिय का चेष्टा, कंसविध्वंसि की माया आदि सब अर्जुन के लिए नया था। उसके अंदर छिपी अदृश्य पक्षी के चार छोटे नन्हें बच्चे अपने पैरों को खोलकर एक साथ आकाश में उड़ गए। उनके साथ माँ भी उड़ गई।

यह वही पक्षी ही है क्या ? अर्जुन ने राधेश्याम से सौम्यता से पूछा।

प्रभु गोपाल के चेहरे पर एक मंद मुस्कान थी। उस घंटी ने इतने दिनों तक इन नन्हों पक्षियों को इस भयंकर युद्ध से रक्षा की।



मध्यावधि समीक्षा कार्यशाला - पुदुच्चेरी के संस्मरण



श्रीमती दीप्ति उप्पण कृष्णन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मध्यावधि समीक्षा कार्यशाला आयोजित करने की योजना की सूचना मुख्यालय कार्यालय द्वारा नवंबर के प्रारंभ में दी गई थी। कार्यशाला का विचार वर्तमान वार्षिक लेखापरीक्षा योजना अर्थात् एएपी 2022-23 के कार्यान्वयन की स्थिति और वार्षिक लेखापरीक्षा योजना 2023-24 के विषयों पर चर्चा करना था। आमतौर पर मध्यावधि समीक्षा बैठकें मुख्यालय के लोगों और फील्ड ऑडिट पार्टियों के साथ-साथ रिपोर्ट अनुभाग के बीच निष्पादन लेखापरीक्षा विषयों पर चर्चा करने के लिए आयोजित की जाती हैं। हालांकि, पहली बार मुख्यालय कार्यालय ने लेखापरीक्षा योजना पर भी चर्चा करने का निर्णय लिया।

मुख्यालय कार्यालय से आगे निर्देश दिया गया कि प्रत्येक कार्यालय से समूह अधिकारी एवं दो शाखा अधिकारी अपने महालेखाकार सहित बैठक में भाग ले सकते हैं। लेखापरीक्षा I से श्री आर.एस. सुरेश कुमार, वरिष्ठ उप महालेखाकार (एएमजी III) और श्री पी राहुल, उप महालेखाकार (एएमजी I) और श्री के. सुरेश, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, रिपोर्ट सिविल, प्रधान महालेखाकार के साथ कार्यशाला में भाग ले रहे थे। चूंकि लेखापरीक्षा योजना पर चर्चा की भी परिकल्पना की गई थी, मुझे भी उनके साथ पुदुच्चेरी में कार्यशाला में भाग लेने का अवसर मिला। लेखापरीक्षा II का प्रतिनिधित्व श्रीमती यशोदा वरिष्ठ उप महालेखाकार, श्री के.जे. टॉमी वरिष्ठ उप महालेखाकार, श्री वी.एस. नवीन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी और श्री अजित पीके, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा किया गया था।



कार्यशाला 28 और 29 नवंबर 2022 को पुदुच्चेरी के आर के एन रिसॉर्ट्स में आयोजित की गई। 27 नवंबर 2022 को शुरू होने वाली यात्रा के लिए टूर प्लान बनाया गया था। श्री आर.एस. सुरेश कुमार, वरिष्ठ उप महालेखाकार, श्री के. सुरेश, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, श्री वी.एस. नवीन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी और मेरे लिए त्रिवेंद्रम एयरपोर्ट से चेन्नई के लिए टिकट बुक किया गया था। फ्लाइट 27.11.2022 को सुबह 8 बजे थी और हम चेन्नई सुबह 9.15 बजे पहुंचे। यात्रा और ठहरने की व्यवस्था लेखापरीक्षा II, तमिलनाडु द्वारा की गई थी। हमें चेन्नई एयरपोर्ट से कार द्वारा आर के एन ग्रैंड होटल, अन्नासालाई ले जाया गया, जहाँ हमारे ठहरने की व्यवस्था की गई थी। चेन्नई से होटल तक लगभग तीन घंटे की ड्राइव थी। हमने जमीन के बड़े क्षेत्रों पर कैसुरिना के लगाए गए पेड़ों को देखा। कई जगहों पर खजूर और इमली के



पेड़ सड़कों पर लगे थे। सड़कों का चौड़ीकरण बड़े पैमाने पर किया जा रहा था। शहरीकरण का सामना कर रहे गांवों से यात्रा एक अनुभव था।

होटल पहुंचकर रिव्रेश होने के बाद अगले दिन होने वाले प्रेजेंटेशन को अंतिम रूप दिया गया। हम अगले दिन की प्रस्तुति का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। एसआर विंग के अधीन अन्य क्षेत्रीय कार्यालयों के सभी शाखा अधिकारी भी उस होटल में थे।



अगले दिन, 28 नवंबर को सुबह 8.30 बजे हमें बैठक की जगह आर के एन रिसॉर्ट्स में ले जाया गया, जो समुद्र के किनारे का रिसॉर्ट था। कार्यशाला सुबह 10.15 बजे शुरू हुई। पहली प्रस्तुति प्रधान महालेखाकार (ऑडिट I) केरल ने अपने वार्षिक लेखापरीक्षा योजना 2022-23 के विषयों पर दी। एडीआई (दक्षिणी क्षेत्र) ने, जो लेखापरीक्षा चल रही हैं उस पर सुझाव देकर हमारा मार्गदर्शन किया। बाद में, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) केरल ने अपने विषयों को प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् लेखापरीक्षा कार्यालयों द्वारा प्रस्तुति दी गई। प्रस्तावित विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। एडीआई और प्रधान निदेशक ने फील्ड कार्यालयों को सुझाव और निर्देश दिए, जो लेखापरीक्षा के लिए महत्वपूर्ण इनपुट थे।

दोपहर के भोजन के बाद तमिलनाडु और कर्नाटक के महालेखाकारों ने अपनी-अपनी वार्षिक लेखापरीक्षा योजनाओं पर प्रस्तुति दी। दोपहर का सत्र दोपहर 2 बजे शुरू हुआ और शाम 4.15 बजे तक चला।

एक व्यस्त दिन से राहत के लिए, एडीआई (दक्षिणी क्षेत्र) ने शाम को इको रिजॉर्ट में सभी को एक मिलन समारोह के लिए आमंत्रित किया। अपने होटलों में फ्रेश होने के बाद हम शाम 7.30 बजे तक वहाँ पहुँच गए। अलाव पहले ही जल चुका था और सभी आराम महसूस कर रहे थे।



यह रात यादगार थी क्योंकि मुख्यालय कार्यालय और अन्य क्षेत्रीय कार्यालयों के सहयोगियों के बीच एकता की भावना थी।



हालाँकि अगले दिन काम था, लेकिन हर किसी का समय अच्छा बीता - गीत गाना, खुलकर बात करना, विचार साझा करना और तस्वीरें लेना। रात के बारे में सबसे अच्छी बात यह थी कि सभी को शामिल किया गया था और किसी को भी छूटा हुआ महसूस नहीं हुआ था।



दूसरे दिन की कार्यसूची में अगली वार्षिक लेखापरीक्षा योजना अर्थात् 2023-24 पर चर्चा की गई। हमारे कार्यालय की वार्षिक लेखापरीक्षा योजना 2023-24 और लेखापरीक्षा II केरल के विषयों पर चर्चा के बाद, पीडी (एस आर) ने वार्षिक लेखापरीक्षा योजना

तैयार करते समय अनुपालन किए जाने वाले निर्देशों पर एक प्रस्तुति दी। इस संबंध में विचार-विमर्श और संदेह दूर करने के बाद, एडीएआई (दक्षिणी क्षेत्र) ने अन्य कार्यालयों की लेखापरीक्षा योजनाओं के बारे में चर्चा की।

कार्यशाला का समापन करते हुए एडीएआई (दक्षिणी क्षेत्र) ने लेखापरीक्षा II तमिलनाडु कार्यालय को उनके द्वारा की गई अति उत्कृष्ट व्यवस्थाओं के लिए धन्यवाद दिया।

कार्यशाला के बाद हमने कुछ समय रिजॉर्ट में ही बिताया। हमारे बीच मैत्रीपूर्ण बातचीत हुई और हमने अन्य क्षेत्रीय कार्यालयों के साथ-साथ मुख्यालय कार्यालय के अपने समकक्षों के साथ अपने अनुभव साझा किए।



रिसॉर्ट से, शाम को, हम बोट क्लब गए। हम चुन्नंबर बोट हाउस से नाव में पैराडाइज बीच पहुंचे। हमें रंग-बिरंगी शॉल पहनाकर दिल से स्वागत किया गया, जो एक सरप्राइज था। पैराडाइज बीच एक



सफेद रेत वाला समुद्र तट है और आश्चर्यजनक रूप से साफ था। यहाँ समुद्र का तल बहुत खड़ा है और वहाँ लाइफगार्ड हैं जो आगंतुकों पर नजर रखते हैं। हमने समुद्र तट पर कुछ समय बिताया और सूर्यास्त के बाद अपने होटलों के लिए रवाना हो गए।



30 नवंबर 2022 की सुबह 6.30 बजे तक हमने पुदुच्चेरी को अलविदा बोला।

यह एक यादगार अवसर था, इसलिए नहीं कि जहां सभी रसद उत्कृष्ट थे और पेशेवर रूप से किए गए थे, बल्कि प्रतिभागियों के बीच एकता और भाईचारा था।



श्रीमती बिंदु के एन
पर्यवेक्षक

एक यात्रा संस्मरण

बहुत दिनों से कहीं जाने का मन कर रहा था। इस व्यस्त जीवन से भागने, मन को शांत करने और पुरानी यादों को वापस लाने के लिए एक यात्रा जरूरी हो गयी थी लेकिन किसी न किसी वजह से कोई भी प्लान बना ही नहीं पा रही थी। अचानक दो-तीन दिन खाली मिले तो सोचने के लिए बिलकुल समय वेस्ट नहीं किया बस कपड़े और कुछ सामान बैग में पैक कर लिए। कहाँ जाना है और कैसे जाना है, कुछ भी तय नहीं था। सोच – सोचकर ही नींद में पड़ गयी। सुबह-सुबह जब आँखों खुलीं तो सूरज की किरणें आकाश पर तेज चमक रही थीं। मैं फ़ौरन उठी, तैयार हुई और अपने कंधे पर सामान उठाकर चल पड़ी और बस स्टॉप पर पहुँची। अलग-अलग जगहों पर जानेवाले लोग अपनी बसों का इंतज़ार कर रहे थे और मैं उनमें से एक बन गयी। पास खड़े एक बूढ़े आदमी ने मुझसे पूछा कि क्या कोयम्बटूर जानेवाली बस आ गई है। साथ में एक मुफ्त सवाल भी है कि बेटी जा कहाँ रही है?

तभी मुझे अपनी लक्ष्य हीन यात्रा याद आ गई। मैंने बूढ़े आदमी को एक नजर देखा और खाली मुस्कान दे कर आगे बढ़ी। अचानक एक बस पास में रुकी और उसमें से तमिल और मलयालम मिश्रित भाषा में आवाज आ रही थी मधुरै ... मधुरै। एक झटके में मुझे अपनी मंजिल मिल गयी.....रामेश्वरम्। बस में चढ़कर और साइड सीट पकड़ कर बैठ गयी।

बाहर के नजारों को देखकर, फोटो लेकर, आधी नींद और आधे सपनों में खोकर पता नहीं कब मदुरे पहुंची और वहां से रामेश्वरम की बस पकड़ ली। पाम्बन पुल पहुंचने पर ड्राइवर ने बीच रस्ते में बस रोककर यात्रियों को पाम्बन पुल का नजारा नजदीक से देखने का मौका दिया। मैं भी वहां उतरी.... सोचा कुछ तसवीरें लूं। समुद्र के बीच से होकर जानेवाला रेलवे ट्रैक का नजारा मेरे मन में उत्सुकता भर दिया और मुझे आश्चर्यचकित बना दिया। जहाज के आने पर रेल की पटरियां दोनों तरफ से ऊपर उड़कर मुड़ जाती है और यह नजारा देखने लायक है। वहां ढेर सारे फोटोग्राफर्स भी खड़े थे जो लोगों की तसवीरें ले रहे थे लोग तरह-तरह के पोस मार कर अपनी तसवीरें खिंचवाने में तल्लीन थे। एक मेरे पास आ गया और विनती करने लगा.. पेट का सवाल है.. एक फोटो लेने दो.... मैंने सोचा एक फोटो ले ही लेती हूँ... अचानक कंडक्टर चिल्लाने लगा सब लोग आ जाओ बस के निकलने का टाइम हो गया है ... मैं बस में चढ़ी... मुड़के देखा तो वो मायूस होकर मुझे देख रहा था ऐसे सफरों में हमारी मुलाकात जाने ऐसे कितने लोगों से हो जाती है ... किसी का चेहरा याद रहता है किसी का भूल जाता है। बस आखिर रामेश्वरम में जाके रुकी जहां हमारे पूर्व राष्ट्रपति अंतिम विश्राम कर रहे हैं। उनका अंतिम विश्रामस्थल देखने की इच्छा बहुत पहले से थी। पहले वहीं जाने का फैसला किया। उनके अंतिम विश्रामस्थल पर एक बहुत ही

सुंदर और विस्मयकारी संग्रहालय था जहां खूबसूरती से हर एक मूर्तिकला की व्यवस्था की गई है।

देश के लिए अमूल्य योगदान देने वाले महान देशभक्त हमारे अपने "ए.पी.जे."हांउस में उनको मिले पुरस्कार, उनकी पुस्तक भी संभाल के रखे गए हैं। उनके बचपन से लेकर मृत्यु तक की कई वस्तुएं, विश्व के महान व्यक्तियों के साथ उनकी मुलाकात की, बच्चे जिनसे उनका बहुत ज्यादा लगावा था उनके साथ खिंची गयी, रोगियों की देखभाल करते हुए खिंची गयी तस्वीरें वहां प्रदर्शित की गयी थीं। अंत में मैंने उनकी कब्र के सामने एक पल के लिए प्रार्थना की। वहां से लौट आयी तो लगभग शाम हो चुकी थी। वहां के सुप्रसिद्ध मंदिर के बारे में कई आख्यायिकाएं सुन रखी थी इसीलिए मुझे शिव जी के दर्शन करने की बहुत इच्छा थी। जब मैं मंदिर के सामने पहुंची तो देखा लोग दो पंक्तियों में खड़े थे। मैं अचरज में पड़ गयी कि किस पंक्ति में खड़ा होना है मुझे। पास में खड़े सुरक्षा अधिकारी से पूछताछ की तो पता चला कि छोटी कतार में खड़ी होने के लिए मुझे 100 रुपये की टिकट लेनी पड़ेगी। भगवान के दर्शन के लिए टिकट ! क्या भगवान का दर्शन करना और मन की शान्ति प्राप्त करना भी धंधा हो गया है ? शिव..शिव!!!! क्या आप नहीं जानते कि आप के नाम पर लोग धंधा

चला रहे हैं ? क्या सादगी के लिए मशहूर हमारे राष्ट्रपति यहीं पैदा नहीं हुए थे? चूंकि मेरे पास एक लंबी रात पड़ी थी और वापसी अगले दिन के लिए ही तय थी आम लोगों की कतार में खड़ी हो कर मैंने शिवशंकर का दर्शन किया और अपने आशियाने में पूरे दिन की यात्रा के अनुभवों को याद करते हुए सो गयी। मैं सुबह जल्दी उठी और पास की दुकान से खाली चाय पीकर तैयार हो गयी। सीधे धनुषकोडी के लिए बस में सवार हो गयी। भारत का आखिरी वीरान छोर। बीते जमाने के अवशेषों की ओर एक यात्रा। एक बेहद रहस्यमयी दुनिया। इस जगह से कई धार्मिक मान्यताएं जुड़ी हुई हैं। सूरज अभी तक निकला नहीं था। काले बादल पैदल सेना की तरह इधर-उधर परेड कर रहे थे, मानो सूरज के आने की खबर दे रहे हो। उगते सूरज की किरणें कभी सात रंगों से चित्र बना रही थी और कभी चमकते लाल रंग बिखेर रही थी। सूर्योदय का अद्भूत नजारा देखने के लिए मुझसे पहले पहुंचे देश के भिन्न-भिन्न प्रांतों से आनेवाले, तरह-तरह के वेश पहनने वाले, छोटे-छोटे बच्चों से लेकर पोते-पोतियों के हाथ थामकर बुजुर्ग लोग, नव विवाहित जोड़े, प्रेमी-प्रेमिकाएं हाथों में हाथ थामे वहां खड़े थे। ऐसे हर्षोल्लास में थे मानो जिन्दगी में पहली बार उगते सूरज का आनंद ले रहे हो। सूर्योदय के बहुरंगीन उत्सव का मजा लूटते हुए सब वीडियो और फोटो लेने में

मस्त थे मैं वहां से पीछे मुड़ी और तब दाईं ओर एक श्री राम मंदिर देखा।

मैं धीरे-धीरे वहां की ओर चली। वह मंदिर पूर्ण रूप से जीर्ण-शीर्ण था और क्षय के सभी लक्षण विद्यमान थे। उसके सामने बरगद का एक सुंदर पेड़ था। उसके नीचे कुछ बूढ़ी औरतें बैठकर नमकीन, करौदा और आम बेच रही थीं, जो खरीदने के लिए बहुत मन कर रहा था। दूर-दूर तक फैला हुआ समुद्र। मंदिर की सीढ़ियों से हाथों के सहारे उतरते समय मैंने विदेशी पर्यटकों से एक गाइड को यह कहते हुए सुना... यह वहीं स्थान है जहां हनुमान जी के नेतृत्व में एक गुप्त बैठक आयोजित की गई थी जब देवी सीता का रावण द्वारा अपहरण हुआ था। यह उस स्मृति में बनाया गया मंदिर है। बचपन से सुनती आती कहानियों की दुनिया को यहां सच में बदलते हुए आश्चर्य हुआ। मैं वहां से आगे बढ़ी। एक ऐतिहासिक स्थान पर पहुंची जो साठ साल पहले हुई भीषण सुनामी में पूरी तरह उजड़ गया था। भारत के बेहतरीन पर्यटन स्थानों में एक था धनुषकोडी। लेकिन साल 1964 में हुई सुनामी ने सब कुछ खत्म कर दिया था। तब से यह जगह सुनसान हो गयी। आजकल छोटी-छोटी झोपड़ियां बनाई गयी हैं और अपने जाल में फंसने वाली मछलियों का व्यंजन बनाकर, चाय और वडा बेचकर अपनी आजीविका चलाने वाले बच्चों और महिलाओं के छोटे-छोटे परिवार यहां बसे हुए हैं। बीते समय की रंगीन जिन्दगी अब भी खण्डहरों में

दिखाई पड़ती है। मंदिर और मस्जिदों के मिट्टी में मिले ध्वंसावशेष हम देख सकते हैं। एक उजड़ा हुआ रेलवे ट्रैक इतिहास का एक टुकड़ा है जो वर्षों बीतने के बावजूद जीवित है। एक डाक घर जो आधा जमीन में धँस गया है, एक आदमी को छोड़कर पूरे गाँव को पानी निगल लिया था। समुद्र की वर्तमान शांति कितनी सुंदर है, न जाने कितने ख्वाहिशें कितनी उम्मीदें एक पल के समुद्र के प्रकोप में खो गए थे।

क्या इस बीते जमाने इन अवशेषों को जानने पहचानने से आनेवाली पीढ़ियाँ वंचित रह जाएंगे ? क्या यह गांव जहाँ इतिहास सोया हुआ है, को ऐसा ही रहने दिया जाएगा ? इस तरह के हजारों सवाल के साथ मैंने अंतहीन समुद्र से अलविदा कह दिया। वापसी में मैंने मदुरा मीनाक्षी मंदिर में देवी के दर्शन

करके जाने का फैसला किया था। मंदिर पहुंची तो देखा वहाँ भी पूरी व्यवस्था बदल गयी है। पूरा शहर छोटे-छोटे व्यापारियों से भर गया है। मंदिर के ठीक सामने ही तरह-तरह की शोक की दुकानें हैं। देवी दर्शन के लिए भी दो तरह की टिकटें बिकी जा रही थी। जिस मणिकर्णिका ने पूरे मदुरा नगर को जलाया था उसके दर्शन के लिए दो तरह की टिकटें। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी और मुझे वापस जाना भी था तो मुझे आखिरकार टिकट लेकर देवी दर्शन करना पड़ा था। उस मंदिर के हर गोपुर द्वार और 1000 खंभों वाले मंडप में मूर्तिकारों के शिल्प कौशल, धैर्य, सहनशीलता और सौंदर्य अवधारणा को मन से नमन करते हुए मुझे अपने व्यस्त कार्यक्रम में लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। मन ही मन अगली यात्रा की तैयारी करते हुए.....



हिंदी में सर्वाधिक कार्य किए अनुभागों के लिए रॉलिंग ट्रॉफी



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय

प्रधान महालेखाकार श्री बिजु जेकब से ट्रॉफी स्वीकार करते हुए ए ए का स्था (हकदारी) अनुभाग के वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी श्रीमती शुभा वी एल एवं श्री कण्ठन आर पी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) का कार्यालय

प्रधान महालेखाकार श्रीमती अनिम चेरियान से ट्रॉफी स्वीकार करते हुए ए एम जी II (मुख्या. IV) अनुभाग के वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी श्री के वेणुगोपाल एवं श्रीमती सोनी सोमन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



श्रीमती विष्णुदेवी राजसेनन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भले ही कोविड-19 महामारी ने हम सबकी सेहत खराब कर दी है, बेशक लॉकडाउन की अवधि ने हमें बहुत कुछ सिखाया है, जैसे परिवार के सदस्यों के साथ बहुत समय बिताना, घर में पौधे उगाना आदि। इस अवधि में हमारे मुख्यमंत्री ने जनता के आंदोलन को प्रतिबंधित करने के लिए सभी लोगों को घर पर सब्जी उगाने की सलाह दी।



छत बागवानी

उस समय मैंने और मेरे पति ने छत पर पौधे उगाने के बारे में सोचा। बचपन के दिनों से मेरा एक शौक बागवानी था मैं अपनी माँ के साथ बागवानी करती थी। मेरी माँ को गार्डनिंग में काफी दिलचस्पी थी और मैं उनकी मदद करती थी। अब मेरी माँ 84 साल की हैं और मैं हर शनिवार को उनसे मिलने जाती थी और मेरे आने के दौरान वह मेरे पौधों के बारे में पूछताछ करना कभी नहीं भूलती। एक वाकया मुझे आज भी याद है। जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ रही थी और अपने दोस्तों के साथ खेल रही थी, तो मेरी माँ ने मुझे कुछ फूलों के गमलों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में मदद करने के लिए कहा। मुझे गुस्सा आया और मैंने जवाब दिया कि "माँ" हमेशा इधर-उधर गमले क्यों बदलती हैं, अगर आप घर को भी बदल सकते हैं तो आप निश्चित रूप से ऐसा करेंगे और उनकी मदद करने में झिझकेंगे। लेकिन इस उम्र में जब मैंने अपने बेटे से मेरी मदद करने के लिए कहा तो उसने उसी तरह से जवाब दिया जैसा मैंने पहले के दिनों में दिया था। मेरा छोटा बेटा मुझसे कहता था कि एक किलो भिन्डी 35 रुपये में खरीदने के बजाय तुम रुपये क्यों खर्च कर रही हो। एक पौधा लगाने के लिए 300 रु.

आम तौर पर मैं सिर्फ फूलों के पौधों पर ध्यान देती थी और मेरे पास गुलाब, चमेली आदि का अच्छा संग्रह था।



लॉक डाउन अवधि के दौरान हमने अपने स्वयं के उपयोग के लिए सब्जियां उगाने का फैसला किया और इस तरह हमने ग्री बैग और ट्रेस गार्डनिंग के लिए आवश्यक अन्य सभी चीजें खरीदना शुरू कर दिया। शुरुआती खर्च बहुत अधिक थे और हमने अच्छे तरीके से करने की योजना बनाई जो इमारत को भी नुकसान न पहुंचाए। हमने लोहे के स्टैंड खरीदे और उन्हें छत पर व्यवस्थित किया। शुरुआत में हमने खूब मेहनत की और कुछ महीनों के बाद हमें पौधों से उपज मिलने लगी। अब तक हम बगीचे की देखरेख कर रहे हैं। मनुष्यों की तरह स्वस्थ भोजन करने वाले पौधों को भी उचित देखभाल की आवश्यकता होती है। पौधों को बीमारियों और कीड़ों से बचाने के लिए भी उचित देखभाल की जानी चाहिए। इसलिए अक्सर हम जैविक कीटनाशकों का इस्तेमाल करते थे जो सब्जियों को नुकसान नहीं पहुंचाते अब पिछले तीन साल से हमने बाजार से सब्जियां खरीदना कम कर दिया है। ■

कभी-कभी हम देख सकते हैं कि कितनी ही छोटी-छोटी चिड़ियाँ और तितलियाँ आती हैं और फूलों से शहद चूसती हैं और यहाँ तक कि पक्षी भी बड़े पौधों में अपना घोंसला बनाते हैं और उस पर अंडे देते हैं।

जहाँ तक मेरा संबंध है, बागवानी एक आरामदायक गतिविधि है और यह हमारे मानसिक तनाव को कम करती है। अब मैं और मेरे पति घर पर अकेले हैं और हम अपने खाली समय का अधिकांश समय बागवानी में बिताना पसंद करते हैं। प्रतिदिन प्रातःकाल हम ऊपर जाते हैं और प्रत्येक पौधे के विकास को देखते हैं।

इसलिए मैं भगवान का शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होंने मुझे पौधों के लिए समय बिताने का मौका दिया।





31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए 'केरल विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली' - केरल सरकार पर भारत के नियंत्रक -महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट सं. 4 - कार्यकारी सार

31 मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए 'केरल विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली' - केरल सरकार पर भारत के नियंत्रक -महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट सं. 4, संविधान के अनुच्छेद 151 (2) के तहत केरल के राज्यपाल को समर्पित करने हेतु तैयार की गई थी। इस रिपोर्ट में 2016-21 की अवधि के 'केरल विश्वविद्यालय की कार्य प्रणाली' की लेखापरीक्षा के परिणाम अंतर्विष्ट हैं।

'केरल विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली' पर एक निष्पादन लेखापरीक्षा आयोजित की गई थी, जिसका उद्देश्य विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों, मानव संसाधनों के निर्माण एवं विकास तथा आधारभूत सुविधाओं और वित्तीय प्रबंधन की योजना एवं निष्पादन का आकलन करना था। निष्पादन लेखापरीक्षा के प्रमुख निष्कर्ष नीचे दिए गए हैं।

योजना, शैक्षणिक गतिविधियां और वित्तीय प्रबंधन विश्वविद्यालय के पास अनुमोदित मास्टर प्लान नहीं था जिसके विरुद्ध नियमित रूप से प्रगति की निगरानी की गई, जिसके परिणामस्वरूप अवसंरचना परियोजनाओं, सॉफ्टवेयर, पाठ्यक्रम के संशोधन आदि के समय पर कार्यान्वयन में कमियां हैं।

(पैराग्राफ 2.1)

कॉलेज विकास परिषद, संबद्ध कॉलेजों के एकीकृत विकास को सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा परिकल्पित एक निकाय में केवल एक सदस्य था। यूजीसी के दिशानिर्देशों के अनुसार कॉलेजों के साथ बातचीत नहीं की गई थी।

(पैराग्राफ 2.2)

एनएएसी मान्यता के लिए देय 17 विश्वविद्यालय प्रौद्योगिकी संस्थानों (यूआईटी) में से किसी ने भी मान्यता प्रक्रिया शुरू नहीं की थी। मान्यता के अभाव में, हितधारकों के पास प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता के बारे में आश्वासन नहीं था।

52 अध्ययन मंडलों में शिक्षकों/विशेषज्ञों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं था।

142 पाठ्यक्रमों में से 28 पाठ्यक्रमों के पाठ्यक्रम को पिछले तीन वर्षों के दौरान संशोधित नहीं किया गया था। पाँच पाठ्यक्रमों के पाठ्यचर्या के संशोधन में आठ से 13 वर्षों के बीच और 23 अन्य पाठ्यक्रमों के संबंध में एक से पाँच वर्षों के बीच का विलंब हुआ। वर्ष 2015-16 और 2016-17 के लिए दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम की मान्यता वापस लेने के परिणामस्वरूप 2013-15 के दौरान 10 गैर-अनुमोदित पाठ्यक्रमों का संचालन किया गया और विश्वविद्यालय द्वारा शपथ पत्र प्रस्तुत नहीं किया गया।

(पैराग्राफ 2.3)

विश्वविद्यालय समय-समय पर संबद्ध महाविद्यालयों का निरीक्षण करने में विफल रहा। इसके अलावा, केरल विश्वविद्यालय अधिनियम, 1974 के तहत आवश्यक संबद्ध कॉलेजों पर कोई रिपोर्ट केरल सरकार को प्रस्तुत नहीं की जा रही थी।

(पैराग्राफ 2.4)

अवसंरचनात्मक विकास कार्यों को करने में विश्वविद्यालय की विफलता के परिणामस्वरूप बारहवीं पंचवर्षीय योजना अवधि (2012-17) के दौरान सामान्य विकास सहायता के रूप में यूजीसी द्वारा आवंटित 15.76 करोड़ के विरुद्ध केवल 8.70 करोड़ की प्राप्ति हुई।

(पैराग्राफ 2.5)

वेतन संशोधन बकाया के भुगतान के लिए 14.14 करोड़ के व्यय के विरुद्ध केरल सरकार से केवल 4.57 करोड़ प्राप्त हुए थे। शेष 9.57 करोड़ की राशि का उपयोग विश्वविद्यालय के गैर-योजनागत निधि से किया गया था।

(पैराग्राफ 2.7)

35वाँ राष्ट्रीय खेल स्टेडियम के निर्माण के लिए 2010 में पट्टे पर ली गई भूमि के लिए दिसंबर 2014 से 19.09 करोड़ (जीएसटी को छोड़कर) का बकाया किराया प्राप्त होना बाकी है।

(पैराग्राफ 2.8)

विश्वविद्यालय से संबद्ध स्ववित्तपोषित एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों से 11.63 करोड़ का वार्षिक प्रशासन शुल्क का संग्रहण लंबित है।

(पैराग्राफ 2.9)

यूनिवर्सिटी द्वारा स्व-वित्तपोषण मोड में संचालित केरल यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन (केयूसीटीई) और यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग 2016-20 के दौरान लगातार घाटे में चल रहे थे।

(पैराग्राफ 2.10)

राजस्व संग्रह की निगरानी और बैंक/कोषागार लेनदेन की वास्तविकता सुनिश्चित करने के लिए मांग संग्रह शेष विवरण और समाधान विवरण पर भरोसा नहीं किया जाता है।

(पैराग्राफ 2.11)

विश्वविद्यालय भविष्य निधि खाते में 7.23 करोड़ का घाटा राजकोष में अनुरक्षित एक दशक से अधिक बीत जाने के बावजूद भी जारी था।

(पैराग्राफ 2.14)

हालांकि, मलयालम लेक्सिकन (2009) के खंड VIII के प्रकाशन के बाद 12 साल बीत चुके हैं, 2016 में प्रकाशित एक त्रुटि-ग्रस्त खंड IX के अलावा, अगला खंड अभी तक तैयार नहीं हुआ है। अप्रैल 2017 में कुलपति के आदेश से खंड IX की बिक्री रोक दी गई थी।

(पैराग्राफ 2.15)

मानव संसाधन

प्रोफेसर के एक भी स्वीकृत पद के बिना नौ शैक्षणिक विभाग कार्य कर रहे थे। नैनोसाइंस और नैनोटेक्नोलॉजी विभाग 2016 में अपनी स्थापना के बाद से संकाय के किसी स्वीकृत पद के बिना काम कर रहा था।

(पैराग्राफ 3.1.1)

संविदा के आधार पर शिक्षकों की नियुक्ति को अधिकतम 10 प्रतिशत तक सीमित करने के यूजीसी के नियमन के विपरीत, विश्वविद्यालय के विभागों में कुल संकाय संख्या के 23 प्रतिशत से अधिक को अनुबंध के आधार पर नियुक्त किया गया था।

इसके अलावा, 34 यूआईटी, 10 केयूसीटीई, सात यूआईएम और यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में सभी 335 शिक्षण संकाय अनुबंध के आधार पर नियुक्त किए गए थे। 34 यूआईटी में 174 शिक्षकों में से 108 शिक्षकों को यूजीसी द्वारा निर्धारित मानदंडों के उल्लंघन में नेट/सेट/पीएचडी योग्यता के बिना नियुक्त किया गया था।

(पैराग्राफ 3.1.2)

जांच

संबद्ध महाविद्यालयों में यूजी कार्यक्रम के लिए 2016 और 2017 की परीक्षाओं के अंतिम सेमेस्टर मूल्यांकन के आयोजन में देरी परीक्षा कैलेंडर की तुलना में एक मामले में 200 दिनों से अधिक और दो मामलों में 100 और 200 दिनों के बीच थी। दो उदाहरणों में परिणामों के प्रकाशन में विलम्ब 300 दिनों से अधिक था। प्रत्येक चार मामलों में विलम्ब 200 से 300 दिनों के बीच और 100 और 200 दिनों के बीच था।

(पैराग्राफ 4.1)

297 परीक्षा केन्द्रों में से केवल छः में उत्तरपुस्तिकाओं के सत्यापन के साथ रिक्त उत्तरपुस्तिकाओं के लेखांकन की प्रणाली त्रुटिपूर्ण थी।

(पैराग्राफ 4.4)

विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों के बाद भी सारणीकरण सॉफ्टवेयर से संबंधित कमियों को आंशिक रूप से ही ठीक किया गया था। सुरक्षा लेखापरीक्षा अभी की जानी है।

(पैराग्राफ 4.6)

आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि से 60 दिनों के भीतर निर्धारित समय के मुकाबले 21,800 से अधिक मामलों में उत्तर पुस्तिकाओं के पुनर्मूल्यांकन में लगने वाला समय 120 दिनों से अधिक हो गया। इस प्रक्रिया में 7,700 से अधिक उदाहरणों में 240 से अधिक दिन लगे।

(पैराग्राफ 4.7)

नौ यूआईटी और दो यूआईएम की अवसंरचना नमूना-जांच से भूमि की कमी के अलावा शौचालय, सेमिनार हॉल, कैंटीन हॉल की कमी सहित आधारभूत संरचना में अपर्याप्तता का पता चला।

(पैराग्राफ 5.1.1)

अगस्त 2013 में स्वीकृत 'केरल विश्वविद्यालय पुस्तकालय में स्मार्ट कार्ड प्रणाली' परियोजना, जिसकी परिकल्पना समय, लागत और श्रम को बचाने और आसान सूची नियंत्रण और स्टॉक सत्यापन, भीड़ को कम करने आदि की सुविधा के लिए की गई थी, आठ साल बाद भी अधूरी रही।

(पैराग्राफ 5.1.2)

जबकि तिरुवनंतपुरम में एक विश्वविद्यालय स्वास्थ्य केंद्र, जो आपातकालीन चिकित्सा उपचार प्रदान कर सकता था, गैर-कार्यात्मक था, दूसरा जीर्ण-शीर्ण भवन में काम कर रहा था।

(पैराग्राफ 5.2)

विश्वविद्यालय के विभागों और विश्वविद्यालय के अन्य संस्थानों में रैंप, लिफ्ट और अलग शौचालय सहित विकलांगों के लिए प्रदान की आधारभूत संरचना की व्यवस्था अपर्याप्त थी।

यद्यपि विश्वविद्यालय पुस्तकालय में 'दृष्टिबाधित उपयोगकर्ताओं के लिए संसाधन केंद्र' की स्थापना के लिए सिविल कार्य और विद्युत कार्य पूर्ण हो चुके थे, लिफ्ट की स्थापना प्रारंभ नहीं हुई थी, और कंप्यूटर अभी खरीदे जाने हैं।

(पैराग्राफ 5.3)

59 सॉफ्टवेयर/वेबसाइटों में से केवल एक वेबसाइट की सुरक्षा लेखापरीक्षा की गई थी और दूसरी का कार्य प्रगति पर था। कैश काउंटर सॉफ्टवेयर, ऑनलाइन भुगतान पोर्टल आदि की सुरक्षा लेखापरीक्षा नहीं की गई थी।

(पैराग्राफ 5.4.4)

2011-17 के दौरान 9.70 करोड़ की लागत वाले पाँच प्रमुख आधारभूत संरचना कार्य अधूरे रहे।

(पैराग्राफ 5.5.2)



श्री वी पी अप्पुकुट्टन पोतुवाल

श्री वी पी अप्पुकुट्टन पोतुवाल केरल के प्रमुख गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता हैं। उन्हें 2023 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया। अप्पुकुट्टन मास्टर गांधी मार्ग के संरक्षक हैं, गांधीजी के जीवन के आध्यात्मिक पहलू में डूबा हुआ अकलंकित व्यक्तित्व। हालाँकि वे केरल में गांधीवादी गतिविधियों के क्षेत्र में नेतृत्व की भूमिका नहीं निभा सके, लेकिन वे सभी गांधीवादी लोकप्रिय गतिविधियों का हिस्सा थे। अप्पुकुट्टन मास्टर के जीवन को 'खादी के लिए समर्पित एक संपूर्ण जीवन' कहा जा सकता है। खादी दुकान प्रबंधक से लेकर खादी आयोग में सर्वोच्च पद तक को उन्होंने अलंकृत किया है। गांधी साहित्य के लिए केरल गांधी मेमोरियल फाउंडेशन के हीरक जयंती पुरस्कार से उनकी पुस्तक 'स्परिचुअलिटी इन द विजन ऑफ गांधी' को सम्मानित किया गया। उनका पुत्र श्री योगेश प्रधान महालेखाकार (लेख व हक), केरल, तिरुवनंतपुरम कार्यालय में वरिष्ठ लेखा अधिकारी के पद पर कार्यरत है।

प्रकृति



शशि कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रकृति की लीला न्यारी,
कहीं बरसता पानी, बहती नदियाँ,
तो कहीं उफनता समुद्र है,
तो कहीं शांत सरोवर है।
प्रकृति का रूप अनोखा कभी,
कभी चलती साए साए हवा,
तो कभी मौन हो जाती,
प्रकृति की लीला न्यारी है।
कभी गगन नीला पीला हो जाता है,
तो कभी काले-सफ़ेद बादलों से घिर जाता है,
प्रकृति की लीला न्यारी है।
कभी सूरज रोशनी से जग रोशन करता है,
तो कभी अंधियारी रात में चाँद तारे टिम टिमाते हैं,
प्रकृति की लीला न्यारी है।
कभी सूखी धरा धूल उड़ती है,
तो कभी हरियाली की चादर ओढ़ लेती है,
कहीं सूरज एक कोने में छुपता है,
तो दूसरे कोने से निकलकर चौंका देता है,
प्रकृति की लीला न्यारी है।



नराकास संयुक्त राजभाषा उत्सव 2021-22



सर्वोत्तम पत्रिका पुरस्कार -
प्रथम स्थान -
संयुक्त गृह पत्रिका सविता

वर्ष 2021-22 के दौरान उत्कृष्ट कार्य हेतु राजभाषा वैजयंती पुरस्कार



द्वितीय स्थान - लेखापरीक्षा II कार्यालय -
श्रीमती यशोदा, वरिष्ठ उप महालेखाकार



चौथा स्थान - लेखापरीक्षा I कार्यालय -
श्री पी के लालू, वरिष्ठ उप महालेखाकार



अध्यक्ष नराकास एवं प्रधान महालेखाकार (ले व हक) श्रीमती जी सुधर्मिनी से पुरस्कार प्राप्त कर रहे प्रधान महालेखाकार (लेप-I) एवं प्रधान महालेखाकार (लेप-II) के कार्यालयों के पदाधिकारी गण



भारतीय समाज की महिलाएं



सुश्री जे आर मालविका
सुपुत्री राखी पी ओ
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हमारा देश भारत बहुत गर्व से मातृभूमि में रहने का दावा करता है और विभिन्न महिला देवी-देवताओं की पूजा करता है। लेकिन यह अत्यंत चिंता का विषय है कि महिलाओं को समान सम्मान और समान दर्जा नहीं मिलता है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र वाले देश में रहते हुए भी भारत में महिलाएं एक ऐसी लड़ाई लड़ती हैं जो एक पुरुष कल्पना भी नहीं कर सकता। भारतीय महिलाओं की समस्याएं सिर्फ सामाजिक अधिकारों तक ही सीमित नहीं हैं, यहाँ तक कि कार्यस्थलों और घरों में भी समस्याएं व्यापक हैं। समस्याएं अनंत हैं और दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही हैं, आइए उनमें से कुछ जान लेते हैं।

हमारे सामने आने वाली पीढ़ी को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा, उनमें सती प्रथा भी शामिल थी जो तब होती

है जब किसी महिला के पति की मृत्यु हो जाती थी और उस विधवा को पति की चिता के साथ ही जला दिया जाता था क्योंकि समाज में ऐसी महिला सुरक्षित नहीं रह सकती है। सती प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया गया है और कई सरकारों के बदलने के बाद भी महिलाओं के प्रति क्रूरता कम नहीं हुई है। समाज में मुख्य समस्या महिलाओं के लिए निर्धारित नियम, आचरण और व्यवहार के बारे में है। उनमें से कुछ समस्याग्रस्त हैं क्योंकि एक महिला रात में एक पुरुष के बिना बाहर नहीं निकल सकती है, यह अवचेतन रूप से केवल इस विचार को बढ़ावा दे रही है कि महिलाएं असुरक्षित हैं और इसके कारण भारत में कई घरों में परिवार द्वारा लड़के-लड़कियों को समान दर्जा नहीं दिया जाता है। लिंग भूमिकाएं निर्धारित की जाती हैं- एक महिला कैसे बोलती है, कपड़े पहनती है और अपना जीवन-जीने का तरीका चुनती है, यह भी किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा तय किया जाता है जो स्वयं महिला नहीं है लेकिन फिर भी महिलाओं पर उनका अधिकार रहता है।

किसी प्रकार की शक्ति है। कुछ नियम जिनका महिलाओं से पालन करने की अपेक्षा की जाती है, उन्हें मिलनसार होना चाहिए, उन्हें हमेशा समझौता करना चाहिए, भले ही वे दुखी और असुरक्षित वातावरण में हो, महिलाओं के लिए मदद लेने के लिए कोई सुरक्षित जगह नहीं है और उन्हें सभी घरेलू कामों को सीखना चाहिए।

महिलाओं को स्वाभिमान, दक्षता, व्यक्तित्व, व्यक्तित्व क्षमता और प्रतिभा रखने की अनुमति नहीं है। उन्हें उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए दोषी ठहराया जाता है और उनके माता-पिता को स्वयं-निर्मित महिलाओं को विकसित करने के लिए अपमानित और परेशान किया जाता है जो दूसरों को सशक्त बना सकती हैं। उन्हें नेतृत्व की भूमिका निभाने और भविष्य की नीतियाँ बनाने की अनुमति नहीं है। इसी तरह महिलाओं को कम महत्व दिया जाता है और उनके नए विचारों को भी प्रोत्साहित और सम्मानित नहीं किया जाता है। यह देखकर बहुत दुख होता है कि उनसे इतनी अमानवीय और मशीनी स्तर की विशेषज्ञता की उम्मीद की जाती है और फिर भी कोई उनसे खुश नहीं रहता है। उनके साथ सड़कों पर, सार्वजनिक परिवहन में, कार्यस्थल पर और यहाँ तक कि उनके अपने घरों एवं व्यक्तिगत संबंधों में भी बुरा व्यवहार किया

जाता है। समस्याएं दहेज से संबंधित उत्पीड़न जैसे अनेकों हैं, बचपन से युवा तक लड़कियों की उपेक्षा की जाती है और व्यक्तिगत विकास के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है जो उनके पूर्ण प्यार के लिए एक कमजोर नींव बनाता है। जब ऐसे जहरीले वातावरण में लड़कियाँ बड़ी होती हैं तो वे घरेलू हिंसा, वैवाहिक बलात्कार को सहन करती हैं और यहाँ तक कि जब वे रिश्ते में अपमानजनक व्यवहार का सामना करती हैं तो तब भी नहीं बोलती हैं।

महिलाओं के लिए जीवन के हर क्षेत्र में समस्याएँ हैं और इसे रोकने के लिए उन्हें अपने अधिकारों से अवगत होना होगा। एक समाज के रूप में बालिका शिक्षा का समर्थन करना चाहिए और महिलाओं को सरकारी कार्यालयों और कॉर्पोरेट जगत में शक्तिशाली पदों पर देखना चाहिए और किसी भी रूप में दूसरों को परेशान करने वालों के खिलाफ सख्त कानून लागू करना चाहिए और महिलाओं को सशक्त बनाने से एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण होगा जो बहुत शक्तिशाली है और जब महिलाएं ऐसी मुकाम हासिल करती जो अर्थव्यवस्था का निर्माण करती हैं। जब हम एक राष्ट्र के रूप में महिलाओं के योगदान से मुँह नहीं मोड़ेंगे तो हम कई तरह से समृद्ध होंगे। ■

कल की तलाश



श्री रजनीश शर्मा
लेखापरीक्षक



रिश्तों के तमाशे को
देखता मैं और मेरी ही तरह
कुछ रिश्तों को संवारने वाले लोग
दिल की गहराईयों में
छिपी हुई मोतियों को तलाशने वाले लोग
क्या पता था कि वे अब जौहरी
नहीं रहे जो रत्नों को पहचान सके
अपनों को जान सके ।

संवेदनाओं को समझने वाले
अपनी मासूमियत में ही बिक गये
खोटे सिक्के वाले रोशनी की चकाचौंध में
चौराहे पर टिक गये,
अब वे ही लोगों को
बताते हैं रास्ते ।

आजकल कसमें वादे रिश्ते-नातों के
बाज़ार में
ठगे जाने पर भी
हम एक बार
नये सूरज की नई किरण
बनाने में लगे हैं कि
आनेवाला कल, आनेवाला पल
हो मंगलमय, हो मंगलमय । ■

इंतज़ार

(जब कोई युद्ध या दुख होता है तो बच्चे सबसे ज्यादा पीड़ित होते हैं। उनके लिए केवल एक चीज बची है- और वो है 'आशा'- अच्छे वक्त की आशा)



श्रीमती उषा बेटी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कब होगी समाप्त ये लड़ाई
मनुष्यों के आपस की यह दुश्मनी
कब मिलेगी दुबारा वो जिंदगी
जहाँ प्रेम और शांति होगी

छीन लिया गया हमसे सबकुछ
हमारा बचपन और उसकी हर खुशी
न रहे खिलौने, न रहे दोस्तों की यारी
न रही माँ की प्यारी लोरी

सूख गई है धरती सारी
गायब हुई हरियाली भरे नज़ारे
कुछ ही क्षण में हम बन गए बेसहारा
न रहे अपना कहलाने वाले हमारे

गोलियों और गालियों की आवाज
से मुक्त होने का है इंतज़ार
दुबारा माँ की गोद में
चैन से सोने का है इंतज़ार ■



सुश्री रायना जोस बास

सुपुत्री श्रीमती मेरी जया जोस, सहायक
लेखापरीक्षा अधिकारी



मंडला आर्ट

हिंदु धर्म और बौद्ध धर्म की प्राचीन संस्कृत भाषा में मंडला का अर्थ है चक्र। एक पहचान योग्य केंद्र बिंदु जिसमें से प्रतीकों, आकृतियों और रूपों की एक सरणी निकलती है। मंडला चक्र सद्भाव उत्पन्न करने में, बच्चों में एकाग्रता बढ़ाता है। मंडल ब्रह्माण्ड का एक प्रतीक है और हमें अपनेपन की भावना देता है जब हम अपने भीतर के संबंध की जाँच करते हैं। यह माना जाता है कि रेत के प्रत्येक दाने को अनुष्ठान प्रक्रिया के आशीर्वाद से चार्ज किया जाता है और इस प्रकार यह महसूस किया जाता है कि एक पेंटिंग में रखी गई रेत के लाखों या अधिक दानों में से प्रत्येक में शक्तिशाली आशीर्वाद बसा हुआ है।



हिंदी में कार्य करने के लिए राजभाषा विभाग की प्रोत्साहन योजना के तहत प्रमाणपत्र स्वीकार करते हुए विजेता



सुश्री इंदु वी नायर, लेखापरीक्षक
प्रथम पुरस्कार



श्रीमती सौम्य पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
प्रथम पुरस्कार



श्री प्रवीण वी टी, वरि.लेखापरीक्षक
द्वितीय पुरस्कार



श्री जे ए साई कुमार, वरि.लेखापरीक्षक
द्वितीय पुरस्कार

हिंदी में कार्य करने के लिए कार्यालयांतर प्रोत्साहन योजना के विजेता



श्रीमती जास्मिन ए, वरि.लेखापरीक्षक
प्रथम पुरस्कार



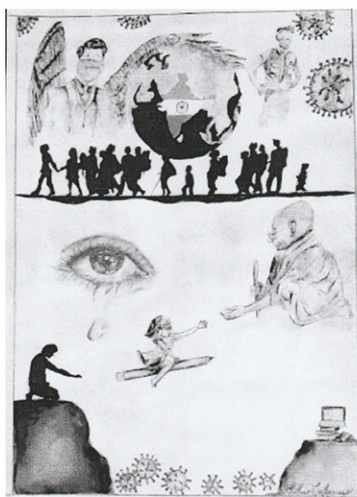
श्री दीपक, डी ई ओ
प्रथम पुरस्कार

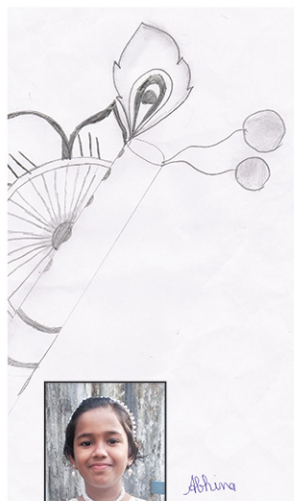


श्रीमती लैना लैनशियस
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
द्वितीय पुरस्कार



श्रीलक्ष्मी एम
सुपुत्री श्रीमती ओमना मधुसूदनन
सहायक पर्यवेक्षक





अभिना अनीष
सुपुत्री श्रीमती जस्मिन
वरिष्ठ लेखापरीक्षक





प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय,
केरल, तिरुवनंतपुरम